इकाई 19 मेजी जापान II

इकाई की रूपरेखा

19.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आपको इन बातों की जानकारी होगी :

- जापान के 1894-1912 के बीच विश्व की रंगभूमि में एक ताकत के रूप में मान्यता प्राप्त करने के प्रयास,
- चीन-जापान युद्ध के कारण, दिशा और प्रभाव,
- आंग्ल-जापानी गठबंधन के जनक कारक,
- रूस-जापान युद्ध के कारण और प्रभाव,
- वे परिस्थितियाँ जिनकी परिणति जापान द्वारा कोरिया के समामेलन में हुई, और
- मंचूरिया में जापान का प्रभाव-क्षेत्र

19.1 प्रस्तावना

सन् 1894 का वर्ष जापान के विदेशों के साथ संबंधों की दृष्टि से एक अत्यंत महत्वपूर्ण वर्ष था। यहाँ से क्षेत्रातीतता का अंत हुआ और सैनिक दृष्टि से चीन से श्रेष्ठ शक्ति के रूप में जापान का उदय हुआ। पश्चिमी ताकतें चौकन्नी हो उठीं और जापान को लेकर उनकी शंकाएँ जापान और चीन के बीच समझौते में हस्तक्षेप के रूप में व्यक्त हुईं। जापान ने यह सबक सीखा कि वह अपने लोगों या उपलब्धियों पर तब तक निर्भर नहीं कर सकता जब तक उन्हें अंतर्राष्ट्रीय स्वीकृति न प्राप्त हो। हम यह पढ़ेंगे कि रूस को जापान और इंग्लैंड दोनों ने किस प्रकार एक खतरा समझा और इस कारण जापान और इंग्लैंड का गठबंधन हुआ। मेजी की अवधि की समाप्ति पर जापान ने क्षेत्रों पर अपने कब्जे में वृद्धि कर ली थी और वह एशियाई परिदृश्य में एक स्वाधीन साम्राज्यवादी ताकत के रूप में उभरा था। इस इकाई में 1894-1912 के बीच जापान की विदेशी नीति और विदेशों के साथ उसके संबंधों के विभिन्न पहलुओं पर विचार किया गया है।

19.2 चीन-जापान युद्ध

सन् 1885 में त्येनजिंग में हुआ ली-इतो समझौता कोरिया को लेकर जापान और चीन के

बीच होने वाली मात्र एक अस्थायी संधि थी। सिओल में चीनी रेजीडेंट, युआन शी-काई, ने कोरिया पर चीन के साथ व्यापार बढ़ाने के लिए प्रभाव डाला। इसमें कोई संदेह नहीं कि कोरियाई आयात में मुख्यतौर पर पश्चिम के निर्मित सामान आते थे जिनका फिर से निर्यात चीनी सौदागर संधिगत बंदरगाहों से कर देते थे। लेकिन वे भी 1885 के कुल 19 प्रतिशत कोरियाई आयात से 1892 में बढ़ कर 45 प्रतिशत हो गये थे। इस तरह जापान और चीन की प्रतिद्वंद्विता अब आधुनिक कपड़ा उद्योग विकसित करने में जापान की सफलता के बाद व्यापार के क्षेत्र तक बढ़ गयी। जापान कोरिया को वस्त्रों का निर्यात धीरे-धीरे बढ़ा रहा था। 1892 में इन्होंने काफी हद तक कोरिया को पुनः निर्यात हाने वाले पश्चिमी उत्पादनों का स्थान ले लिया था, और सूती वस्त्रों के निर्माताओं ने सरकार से आग्रह किया कि वह उन्हें कोरिया में चीन की तुलना में अपनी प्रतिद्वंद्विता बनाये रखने में मदद करे। लेकिन, 1893 में भी कोरिया को जापान के निर्यात केवल 17 लाख येन की कीमत के थे, जबकि जापान के कुल निर्यातों का औसत आठ करोड़ 54 लाख येन था। इसलिए आर्थिक हित शत्रुता के लिए पर्याप्त कारण नहीं थे। रूसी खतरे के प्रति सजगता का आधार 1885 से जापान में रह रहे जर्मन सलाहकारों की सिखायी हुई प्रतिरक्षा की नयी अवधारणा थी। जापानी रणनीतिज्ञों ने ''प्रभुसत्ता की नीति'' के बारे में बात करना शुरू कर दिया जिसमें जापानी द्वीप आते थे। इन रणनीतिज्ञों में विशेष भूमिका जनरल स्टाफ के अध्यक्ष और 1890 में प्रधानमंत्री रहे यामागाता आरितोमो की रही। यामागाता का कहना था कि इसके अतिरिक्त जापान को ''लाभ की नीति'' भी अपनानी चाहिए जिसमें कोरिया आता था। उसका मानना था कि कोरिया की स्वाधीनता की गारंटी देने के लिए किए जाने वाले उपाय जापान की ''लाभ की नीति'' के लिए निर्णायक थे। 1887 में ही जनरल स्टाफ के एक विवेचन दस्तावेज में आकस्मिक (परिस्थिति से संबद्ध) योजना भी बना ली गयी थी कि कहीं कोई पश्चिमी ताकत आक्रमण ही कर दे। इसमें यह कहा गया था कि ऐसी स्थिति में जापान की जवाबी कार्यवाही पीकिंग पर उत्तर से चढ़ाई और दूसरा शंघाई पर हमला हो सकता था। शांति समझौते में मांचू वंश के राज वाले स्वाधीन मंचूरिया का निर्माण, अधिकांश उत्तरी चीन और ताईवान का जापान को हस्तांतरण और दक्षिणी चीन में एक जापानी संरक्षित राज्य की स्थापना को शामिल किया जाना चाहिए। इस दौरान इस दस्तावेज से यह संकेत मिलता है कि जापानी सेना की महत्वकांक्षाएँ किस किस्म की थीं और कैसे वे ये मानते थे कि चीन और कोरिया में शांति और स्वाधीनता को दूसरी पश्चिमी ताकतों के किसी हस्तक्षेप के बिना बनाये रखा जाना चाहिए जिससे जापान की स्वाधीनता बरकरार रखी जा सके।

हथियारबंद विद्रोहियों तंगाकों को कोरिया के न दबा पाने और उनके चीन से सैनिक सहायता मांगने के कारण 1894 की गर्मियों में संकट की स्थिति बन गयी। 1885 के समझौते के तहत, जापान ने तुरंत अपनी सेनाएँ कोरिया में भेज दीं। लेकिन सामरिक कार्यवाहियों का सहारा लेने से पहले एक और कदम उठाया गया, क्योंकि जापानी विदेशी मंत्री मुत्सु मुनोमित्सु ने यह महसूस कर लिया था कि पश्चिमी ताकतें इस बात को स्वीकार नहीं करेंगी कि इसके लिए कोई पर्याप्त बहाना मौजूद था। इसलिए, कोरिया में सुधार लागू करने के लिए एक संयुक्त चीनी-जापानी कार्यवाही के प्रस्तावों की रूपरेखा तैयार की गयी, क्योंकि यह माना गया कि कोरिया में अस्थिरता की स्थिति बनाने का कारण कोरियाई व्यवस्था में ''गहरी जमी बुराईयाँ'' थीं। जापान भी यह चाहता था कि कोरिया में चीनियों को जो विशेषाधिकार मिले हुए थे वे जापानियों को भी दिए जाएँ। प्रतिभावान युवा कोरियाईयों को जापान में अध्ययन के लिए भेजा जाए जिससे कि वे ''कोरिया में सभ्यता लेकर आयें।'' इन प्रस्तावों को माना नहीं गया। इसके बाद 1894 में सामरिक कार्यवाहियाँ हुईं।

क्या जापान ने युद्ध के लिए इन सुधारों को बहाना बनाया? यह कहना सही नहीं हो सकता। जापान वास्तव में यह चाहता था कि चीन का अनुसरण करने के बजाय कोरिया जापान के आधुनिकीकरण की मिसाल का अनुसरण करे। जब जापान ने 1 अगस्त, 1894 को चीन के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की, उस समय तक जापानी सेनाएँ पहले ही सिओल में और उसके आसपास जम चुकी थीं। 16 सितम्बर, 1894 तक प्योंगयांग पर कब्जा किया जा चुका था और अगले दिन नौसैनिक जीत में उन्हें येलो सागर पर कब्जा मिल गया। अक्तूबर में, जापानी सेनाएँ यालू नदी पार करके मंचूरिया में पहुँचीं और लियाओतुंग प्रायद्वीप में भी उतर गयीं। इस तरह जापान का युद्ध के छः महीनों के भीतर पूरे कोरिया और समृद्ध लियाओतुंग प्रायद्वीप पर कब्जा हो गया। उस समय, जापान शांति के लिए

बातचीत को तैयार था। शिमोनोसेकी की संधि 17 अप्रैल, 1895 को संपन्न हुई। उस संधि की शर्तें निम्न थीं :

1) चीन कोरिया की पूर्ण स्वाधीनता और स्वायत्तता को निश्चित मान्यता दे।

2) फारमूसा, उससे लगे हुए पेस्काडोर द्वीपों और लियाओतुंग प्रायद्वीप का स्थायी अधिकार और प्रभुसत्ता जापान को दी जाएगी।

3) चीन जापान को युद्ध में हुए खर्च के एवज़ में 20 करोड़ ताएल (35 करोड़ येन) हरजाने के रूप में देगा।

4) चार अतिरिक्त चीनी शहरों को वाणिज्यिक और औद्योगिक उद्देश्य के लिए खोला जाएगा।

5) शांतुंग प्रायद्वीप के उत्तरी तट पर स्थित वेहाइवे बंदरगाह जापानी सैनिकों के कब्जे में तब तक बने रहेंगे जब तक हरजाने की राशि की अदायगी नहीं हो जाती और चीन और जापान के बीच वाणिज्यिक संधि नहीं हो जाती।

ये शर्तें जापान के पक्ष में थीं। कोरिया से चीन के हटने के बाद, जापान स्वतंत्र होकर कोरिया पर राज्य कर सकता था। लेकिन, यह तुरंत ही संभव नहीं हुआ, क्योंकि जापान को एक और प्रतिद्वंद्वी, रूस से भी टक्कर लेनी थी। इस विषय में हम बाद में पढ़ेंगे। जीत की और उपलब्धियों का लाभ भी चीन की ओर से रूस, जर्मनी और फ्रांस के हस्तक्षेप करने के कारण जापान को नहीं मिल पाया। इसे तिहरे हस्तक्षेप के नाम से जाना जाता है। रूस को एक उष्ण जलीय बंदरगाह की सख्त आवश्यकता थी, इसलिए वह लियाओतुंग प्रायद्वीप को अपने प्रभाव क्षेत्र के रूप में देखने लगा। चीन-जापान युद्ध ने कोरिया में उष्ण जलीय बंदरगाह के उसके अवसरों को क्षीण कर दिया था। फ्रांस और जर्मनी भी रूस के इस दृष्टिकोण से तुरंत सहमत हो गये कि पोर्ट आर्थर और लियाओतुंग प्रायद्वीप का जापान के हाथ में होना सुदूर पूर्व में शांति के लिए खतरा था। इंग्लैंड रूस के आगे बढ़ने को लेकर भयभीत था और वह कोरिया और दक्षिण मंचूरिया में जापान के लाभकारी स्थितियों में होने के कहीं अधिक पक्ष में था। इसलिए उसने हस्तक्षेप में रूस का साथ देने से इनकार कर दिया।

जापान को यह तो अपेक्षा थी कि यूरोपीय ताकतों की ओर से कुछ प्रतिकूल प्रतिक्रयाएँ होंगी, लेकिन जब ये प्रतिक्रियाएँ सामने आयीं तो उसे इन्हें स्वीकार करने में कठिनाई हुई। लेकिन, अंततः जापान को लियाओतुंग प्रायद्वीप छोड़ना ही पड़ा, लेकिन उसे तीन करोड़ ताएल की आंतरिक राशि हरजाने के तौर पर मिल गयी। जापान के अंतर्राष्ट्रीय दबाव के आगे झुक जाने के कारण न केवल सरकार की आलोचना हुई बल्कि आक्रामक विदेश नीति का समर्थन करने वाले एक हानिकारक राष्ट्रवाद को भी हवा मिली। हरजाने में मिली राशि का उपयोग करके सेना की डिवीज़नें 7 से 13 कर ली गयीं और नौसेना की शक्ति भी तीन गुना कर ली गयी। रूस ने भी चीन से चीनी पूर्वी रेलपथ के निर्माण का अधिकार ले लिया। यह रेलपथ व्लादीवॉसतौक को साइबेरिया-पार पथ से जोड़ता था। इसके अतिरिक्त रूस ने दक्षिण में जाकर लियाओतुंग प्रायद्वीप (पोर्ट आर्थर) में समाप्त होने वाली एक रेलपथ शाखा के निर्माण का भी अधिकार हासिल किया। इंग्लैंड ने रूस के पोर्ट-आर्थर पर कब्जे को संतुलित करते हुए वेहाइवे को अपने कब्जे में ले लिया जो पहले जापानी सैनिकों के कब्ज़े में था। जर्मनी ने शांतुंग में विशेष अधिकार ले लिए। फ्रांस को भी अधिकार मिले। ये रियायतें इन ताकतों को विशेष रूप से दी गयीं और चीन उसी क्षेत्र में अन्य ताकतों को इसके बराबर विशेषाधिकार नहीं दे पाया।

19.3 सन् 1894 के बाद चीन में जापान की गतिविधियाँ

इस भाग में हम इस बात पर चर्चा करेंगे कि चीन में अधिक से अधिक प्रभाव जमाने के लिए जापान के लिए कैसे क्या किया।

19.3.1 खुला द्वार नीति

इस तरह एकाधिकारी निवेश अधिकार ऊपर बताये गये विभिन्न प्रभाव क्षेत्रों में जमाये जा चुके थे। लेकिन अमेरिका ने यह प्रयास किया कि ये अधिकार व्यापार के क्षेत्र तक न बढ़ने

पायें। विदेशमंत्री जॉन हे, ने 1899 में खुला द्वार नीति की घोषणा की जिसे अन्य ताकतों ने स्वीकार किया। जापान को चीन में प्रभाव क्षेत्र हासिल करने में सफलता नहीं मिली, लेकिन भविष्य में रूस को चुनौती देने के लिए अपने आपकों तैयार करने की दृष्टि से, उसे इंग्लैंड और अमेरिका के समर्थन की आवश्यकता थी। इसलिए जापान ने भी खुला द्वार नीति स्वीकार कर लेने का फैसला किया।

19.3.2 रियायतों की माँग

चीन-जापान युद्ध के बाद ताईवान पर जो कब्जा किया गया, उसे अनेक प्रभावशाली जापानियों ने, विशेषतौर पर चीन के फ्यूकीएन प्रांत से होते हुए, "दक्षिण की ओर बढ़ने" का एक रास्ता माना। चीन में रियायतों के लिए हुई भागमभाग में जापान ने फ्यूकीएन में विशेष अधिकार हासिल करने का प्रयास किया, लेकिन उसे 1898 में चीन से बस यह आश्वासन मिला कि फ्यूकीएन को किसी और ताकत को नहीं दिया जाएगा। चीन फ्यूकीएन में जापान को रेलपथ की कोई रियायत देने पर भी सहमत नहीं हुआ। 1900 के बॉक्सर विद्रोह में जापान को फ्यूकीएन में चीन से रियायतें हासिल करने का एक और अवसर दिखायी दिया। फिर भी, जापान ने अपने आपको रोके रखा, क्योंकि उसे यह भय था कि इसके जो परिणाम होंगे उससे इंग्लैंड के साथ उसके संबंधों पर आँच आएगी और हो सकता है रूस से भी उसका झगड़ा हो जाए। बॉक्सर विद्रोह में, और उसके बाद चीन की मित्र राष्ट्रों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा, में, जापान ने कुल मित्र सेनाओं की आधी सेना भेजी और मित्र राष्ट्रों की विजय में योगदान किया। अंतिम समझौते के एक अंग के रूप में, चीन ने 45 करोड़ ताएल (33.4 करोड डालर) का हरजाना देने की पेशकश की, जिसमें जापान को भी हिस्सा मिला। राजनायिक प्रतिनिधियों और उनके नागरिकों की सुरक्षा की गारंटी के तौर पर जिन विशेष विशेषाधिकारों पर सहमति हुई, उसका लाभ जापान को भी मिला। चीन अपने आंतरिक विघटन और विद्रोहियों को दबा पाने में असमर्थ रहने के कारण विदेशी ताकतों की दया पर निर्भर हो गया, जिनमें जापान भी था। जापान को पश्चिमी ताकतों की तरह जो विशेषाधिकार हासिल थे उनके आधार पर चीन में उसकी स्थिति दूसरी पश्चिमी ताकतों के बराबर थी।

19.4 आंग्ल-जापानी गठबंधन

मंचूरिया में रूसी रेलपथ प्रतिष्ठानों पर बॉक्सर विद्रोहियों के हमले के समय, रूस ने अपने हितों की रक्षा के लिए बड़ी तादाद में सैनिक भेजे। यह खतरे का संकेत था, क्योंकि रूस मंचूरिया तक सीमित रहने वाला नहीं था। इंग्लैंड के साथ जापान का गठबंधन होने से रूस को चेतावनी मिल सकती थी। इस गठबंधन से होने वाले वाणिज्यिक लाभ थे : अंग्रेजी उपनिवेशों का जापानी व्यापार के लिए खुल जाना, जापान की वाणिज्यिक साख बढ़ना और इंग्लैंड के वित्तीय संसाधनों तक पहुँच होना। नेताओं में से, इतो हिरोबूमी का यह विश्वास था कि कोरिया में जापान के हितों की पूर्ति के लिए इंग्लैंड के बजाय रूस के साथ गठबंधन करना कहीं अच्छा होगा, लेकिन, इतो सरकार का जून 1901 में पतन हो गया और नया प्रधानमंत्री कत्सुरातारो बना जो यामागाता आरितोमो का आश्रित था। सत्ता में आने के बाद कत्सुरा ने अपने मंत्रिमंडल के लिए एक व्यापक राजनीतिक कार्यक्रम तैयार किया। इस कार्यक्रम की मुख्य विशेषताएँ थीं :

1) जापान की वित्तीय बुनियाद को मजबूत करना और औद्योगिक और वाणिज्यिक प्रगति सुनिश्चित करना।

2) किसी एक यूरोपीय देश के साथ समझौता करना, क्योंकि जापान के लिए अकेले अपने बूते पर सुदूर पूर्व की स्थिति की देखभाल करना कठिन था।

3) कोरिया को जापान का संरक्षित क्षेत्र बनाना।

4) नौसेना को 80,000 टन के स्तर तक बढ़ाना।

जापानी राजनेताओं में दो वर्ग थे : एक तो वे जो इंग्लैंड के साथ मित्रता के पक्ष में थे, और दूसरे वे जो रूस के साथ मित्रता के पक्ष में थे। ये वर्ग कट्टर नहीं थे, अर्थात् जो लोग इंग्लैंड के समर्थक थे वे आवश्यक नहीं था कि रूस के शत्रु ही हों, और यही स्थिति दूसरे वर्ग की भी थी।

सेना और नौसेना परंपरा से रूस को एक स्वाभाविक शत्रु मानती आयी थी और वे इंग्लैंड के साथ गठबंधन के पक्ष में थी। सेना नीति को प्रभावित कर सकने की स्थिति में थी। लोगों ने जो संगठन बनाये, उनमें से जन गठबंधन संगठन (कोकुमिन दोमे काई) रूस के प्रति समझौतावादी कूटनीति के विरुद्ध था क्योंकि वह कोरिया और चीन में जापान की शक्ति जमाने के पक्ष में था। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए, **दोमे काई** ने इंग्लैंड के साथ मित्रता का समर्थन किया। फुकुजावा युकिची या कातो तकाकी जैसे मत नेताओं ने अखबारों में इस गठबंधन का समर्थन करने वाले लेखों का प्रायोजन किया। लेकिन गठबंधन के लिए प्रभावशाली कदम सरकार को ही उठाने थे।

सितम्बर, 1901 से चली आ रही कत्सुरा सरकार के विदेशमंत्री, कोमिरा जुतारो, ने ही पूरे मनोयोग से गठबंधन की बातचीतों को आगे बढ़ाया। गठबंधन के प्रस्तावों को साकार करने की दिशा में मेहनत करने वाला एक और व्यक्ति हयाशी तदासू था, जो लंदन स्थित दूतावास में 1900 से 1906 तक मंत्री था। उसने एक "प्रेरक बिचौलिये" की भूमिका निभायी। सामान्य तौर पर, विदेश मंत्रालय के अधिकारी भी रूस-विरोधी थे और गठबंधन के पक्ष में थे।

नवम्बर, 1901 में ब्रिटेन ने उस समझौते का पाठ प्रस्तुत किया जिसमें गठबंधन का मूल विचार मौजूद था। लेकिन, जापान इस विषय में निश्चित नहीं था कि रूस इस तरह के गठबंधन को किस रूप में लेगा। फिर भी, जापानी उस दिशा में ही आगे बढ़ना चाहते थे जो उनके अपने देश के लिए सबसे अनुकूल हो। जैसा कि पहले बताया जा चुका है, रूस समर्थक वर्ग के सबसे प्रमुख सदस्य यामागाता आरितोमो और कत्सुरातारो थे। कत्सुरा और यामागाता यह मानते थे कि रूस की ओर से मित्रता का प्रस्ताव अस्थायी होगा, क्योंकि वह मंचूरिया में आगे बढ़ने और कोरिया में अपनी स्थिति को बेहतर करने की ठाने हुए था, लेकिन इंग्लैंड के लिए दीर्घकालीन हित की बात यह थी कि वह जापान के साथ मित्रता बनाये रखे। दूसरी ओर, इतो का मानना था कि इंग्लैंड के साथ संपर्क से जापान को बहुत कम लाभ मिलेगा। इतो 18 सितम्बर, 1901 को अमेरिका, यूरोप और रूस की विदेश यात्रा पर निकला। लेकिन, जापान छोड़ने से पहले उसने यह स्पष्ट कर दिया कि वह रूस-जापान के बीच समझ की संभावनाओं को टटोलना चाहता था। इतो के नेतृत्व वाला वर्ग यह मानता था कि इंग्लैंड के साथ गठबंधन होने से रूस, फ्राँस और जर्मनी जापान के विरुद्ध एकजुट हो सकते थे, जैसा कि तिहरे हस्तक्षेप के मामले में हुआ था। दूसरी ओर इंग्लैंड समर्थक वर्ग का मानना था कि रूस के साथ गठबंधन से क्षेत्र में केवल अस्थायी शांति आयेगी, जापान को बहुत कम लाभ मिलेंगे, यह जापान के दूरगामी हितों के विरुद्ध होगा क्योंकि इससे चीन की साख नष्ट होगी, और जापान को इंग्लैंड के बराबर नौसैनिक शक्ति रखने के लिए बाध्य होना होगा। दूसरे शब्दों में, यह वर्ग रूस के साथ गठबंधन करने से इंग्लैंड के साथ संबंधों पर पड़ने वाले प्रभावों से डरता था। इंग्लैंड के साथ संधि करने से जापान रूस पर दबाव डाल सकता था और उससे उसके हितों की पूर्ति भी होती। इतो को अपनी विदेश यात्रा के दौरान संधि के प्रारूप की सूचना मिली, लेकन उसका अभी भी यही मानना था कि (1) जब तक इस बात का पता नहीं चल जाए कि रूस के साथ समझ बनाने की संभावना थी या नहीं, तब तक संधि को स्थगित रखा जाए, और (2) जर्मनी को संधि में शामिल न करना अक्लमंदी नहीं थी। फिर भी, उसने संधि की निंदा नहीं की।

इंग्लैंड के साथ संधि पर पहले से सहमत दूसरे जेनरो (यामागाता आरितोमो, मत्सुकाता मासायोशी, इनोवे कुरू और साइगोत्सुगिमिची) ने भी इतो के विचारों पर विचार-विमर्श किया। वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि रूस-जापान के बीच गठबंधन की अभी कल्पना करना संभव नहीं था, और अधिक देरी करने से इंग्लैंड अपने प्रस्तावों को वापस ले लेगा, और जापान इंग्लैंड और रूस की सहानुभूति खो बैठेगा और अलग-थलग पड़ जाएगा। इसलिए उन्होंने यह सिफारिश की कि इंग्लैंड के साथ गठबंधन के लिए कदम उठाये जाने चाहिए। सम्राट ने अंतिम बातचीत के लिए अपनी स्वीकृति को इसलिए रोके रखा था क्योंकि वह इतो के विचार जानना चाहता था। अब सम्राट ने निश्चय किया कि जापान को गठबंधन की प्रक्रिया को आगे बढ़ाना चाहिए। कत्सुरा ने इतो को 11 दिसम्बर, 1901 को यह सूचना दी कि सम्राट ने उसके विचार जानने के बाद ही यह निर्णय लिया था। इस तरह यह घटनाक्रम यह "दिखाता है कि निर्भीक जेनरो नीति निर्माण पर क्या प्रभाव डाल सकते थे और अंतिम निर्णय किस तरह सम्राट के हाथों में था।"

गठबंधन के लिए बातचीत आगे बढ़ी क्योंकि इंग्लैंड और जापान का समान विरोधी रूस

था। दोनों देशों ने 1901 में अलग-अलग समय पर गठबंधन के लिए पहल की थी, लेकिन सामान्यतौर पर इंग्लैंड ने ही विचार-विमर्श की अगुवाई की थी।

आंग्ल-जापानी गठबंधन पर 30 जनवरी, 1902 को हस्ताक्षर हुए, जिसमें कोरिया में जापान के और चीन में इंग्लैंड के विशेष हितों को मान्यता दी गयी। इस बात पर सहमति हुई कि किसी तीसरी ताकत से खतरे की दिशा में,या कोरिया और चीन के भीतर अशांति की स्थिति में, दोनों ही इन हितों की रक्षा के लिए आवश्यक उपाय करेंगे। दोनों देशों में इस बात पर सहमति हुई कि यदि उनमें से किसी को अपने हितों की रक्षा के लिए युद्ध में लगना पड़ा तो दोनों तटस्थ रहेंगे। लेकिन, अगर कोई तीसरी ताकत ऐसे किसी युद्ध में शामिल हुई तो, वे तुरंत एक-दूसरे की सहायता को आगे आएंगे। यह समझौता पाँच वर्ष तक प्रभावी रहना था। एक गुप्त नौसैनिक समझौता भी हुआ जिमसें यह प्रावधान रखा गया कि युद्ध के समय दोनों देश एक-दूसरे के बंदरगाहों का उपयोग कर सकेंगे। इसमें यह भी प्रावधान रखा गया कि दोनों देश ऐसी नौसेना रखेंगे जो सुदूर पूर्व की जल सीमाओं के भीतर मौजूद किसी भी दूसरी ताकत की नौसेना के मुकाबले कहीं अधिक श्रेष्ठ होगी। संधि की शर्तों के तहत और अदला-बदली की गयी। कूटनीतिक टिप्पणियों में यह स्पष्ट कर दिया गया था कि रूस और जापान के बीच युद्ध की स्थिति में इंग्लैंड बीच में आने को बाध्य नहीं होगा, लेकिन यदि रूस जापान पर चढ़ाई का प्रयास करता है तो जापान अंग्रेजी नौसेना की सहायता पर निर्भर कर सकेगा।

यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि इंग्लैंड के साथ गठबंधन के विकल्प को चुन कर जापान ने अपने मतभेदों को निपटाने के बजाये रूस के साथ युद्ध को प्राथमिकता दी। इंग्लैंड के साथ गठबंधन जापान को खास-खास मतभेदों को निपटाने के लिए रूस से संपर्क करने से रोकता नहीं था।

इस गठबंधन से जापान की प्रतिष्ठा बढ़ी। इससे कोरिया में जापान के विशेष हितों को इंग्लैंड की मान्यता भी मिली, और यह भी सुनिश्चित हो गया कि रूस-जापान युद्ध की स्थिति में फ्राँस रूस की सहायता नहीं करेगा। इंग्लैंड ने जापान-रूस गठबंधन होने से रोक लिया था। रूस ने इससे संकेत पाकर मंचूरिया से अपने सैनिक हटा लिए, जो बॉक्सर विद्रोह के समय से ही मंचूरिया में रह गये थे। चीन मंचूरिया में रेलपथों से संबंधित विशेष विशेषाधिकारों की रूस की योजनाओं का प्रतिरोध करने में समर्थ रहा।

बोध प्रश्न 1

1) शिमोनोसेकी की संधि किन घटनाओं की परिणति थी? इस संधि से किस देश को लाभ पहुँचा? 15 पंक्तियों में उत्तर दें।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2) खुला द्वार नीति से आप क्या समझते हैं? 10 पंक्तियों में समझा कर लिखें।

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

3) आंग्ल-जापानी गठबंधन क्यों संपन्न हुआ? 15 पंक्तियों में इस गठबंधन के संदर्भ में समझाइए।

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

19.5 रूस-जापान युद्ध

इंग्लैंड के समर्थन के कारण जापान 1854 के बाद से किसी दूसरे तिहरे हस्तक्षेप से भयमुक्त होकर रूस के प्रति आक्रामक रवैया अपना सका। जापान ने रेलपथों के निर्माण और महत्वपूर्ण बंदरगाहों के आसपास सम्पत्ति पर अधिकार करने समेत कोरिया में अपनी रियायतों को बढ़ा लिया था। व्हेल पकड़ने, मछली पकड़ने और उत्खनन के विशेष अधिकार भी हासिल कर लिये गये थे। लेकिन, जापान उत्तर पश्चिमी कोरिया में रूस को लकड़ी की रियायतें दिए जाने की संभावना को स्वीकार करने को तैयार नहीं था। चीन ने तो मंचूरिया में रूस को और अधिक रियायतें देने का प्रतिरोध किया था, जिससे मंचूरिया रूस का संरक्षित राज्य बन जाता, लेकिन रूस के इरादे स्पष्ट थे।

रूस का यह प्रयास था कि बातचीत के जरिए जापान से यह स्वीकृति ले ली जाए कि मंचूरिया और इसका समूचा तटवर्ती क्षेत्र रूस का विशेष प्रभाव क्षेत्र रहेगा, जिससे रूस को समुद्र के रास्ते दाइरेन और पोर्ट आर्थर से व्लादीवोस्तौक तक संचार का बाधारहित मार्ग मिल जाएगा। इसके बदले में, रूस कोरिया में जापान के विशेष हितों को स्वीकार करेगा,

जिसमें कोरिया को सुधारों के विषय में परामर्श देना शामिल होगा, लेकिन, कोरिया की स्वाधीनता पर कोई आँच नहीं आने दी जाएगी और कोरिया के किसी भी बंदरगाह का प्रयोग रणनीतिक उद्देश्यों के लिए नहीं किया जाएगा और कोरिया में कोई तटरक्षक तंत्र नहीं बनाया जाएगा। उनतालिसवें आक्षांश के उत्तर में स्थित कोरिया का भाग एक तटस्थ क्षेत्र होगा। जापान ने उत्तरी कोरिया के दोनों ओर 50 कि.मी. का प्रतिरोधक (बफर) क्षेत्र बनाने का प्रति प्रस्ताव रखा, लेकिन उसने कोरिया का रणनीतिक उद्देश्यों के लिए प्रयोग न करने का कोई वचन नहीं दिया। वार्ता में गतिरोध आ गया। जापान के पास दो विकल्प थे, या तो वह :

1) कोरिया पर प्रतिबंधित प्रभुत्व को स्वीकार करे, मंचूरिया से बाहर रहना स्वीकार करे और कोरिया के दोनों ओर पश्चिम में पोर्ट आर्थर और उत्तर पूर्व में व्लादीवोस्तौक में, रूसी नौसैनिक अड्डों के जंजाल को स्वीकार करे, या

2) रूस के साथ इस आशा के साथ युद्ध में उतरे कि वह रूस को उत्तरपूर्वी एशिया से निकाल बाहर करेगा।

जापान ने दूसरे विकल्प को चुना और फरवरी, 1904 में जापान की थल और नौसेना ने कोरिया को अड्डा बना कर मंचूरिया में रूसी ठिकानों पर हमले कर दिए। जापान की नौसेना ने बहुत जल्दी पोर्ट आर्थर और व्लादीवोस्तौक को जाने वाले नौसैनिक पहुँच मार्गों पर अपनी श्रेष्ठता स्थापित कर ली। यूरोप से भेजा गया रूस का बाल्टिक बेड़ा त्सुशिमा जल उमरूमध्य में पहुँच गया, लेकिन एडमिरल टोगो हेहाचीरो ने उसे हरा दिया। यह हार रूस के शांति के निवेदन के लिए निर्णायक रही। युद्ध में जापान के काफी सैनिक मारे गये और त्सुशिमा की लड़ाई के पहले ही, उसने युद्ध विराम के विषय में गंभीरता से विचार किया था, लेकिन रूस ने बातचीत को इच्छुक होने का कोई संकेत नहीं दिया।

त्सुशिमा की विजय के बाद, राष्ट्रपति थ्योडोर रूज़वेल्ट ने शांति शर्तों को तय करने के लिए अपने प्रभाव का उपयोग करने के निवेदन को स्वीकार कर लिया। पोर्ट्समाउथ, अमेरिका में 10 अगस्त, 1905, में शांति सम्मेलन प्रारंभ होने से पहले ही, राष्ट्रपति रूज़वेल्ट फ्रांस और जर्मनी को यह चेतावनी दे चुके थे कि यदि उन्होंने जापान के विरुद्ध कोई कार्यवाही की तो, वह जापान का साथ देंगे। इसके अलावा, फिलीपीन में अमेरिकी हितों की रक्षा के लिए जुलाई, 1905 में जो टैफ्ट-कत्सुरा समझौता हुआ, उसमें जापान को इस आश्वासन पर कोरिया पर उसके अधिराज्य को अमेरिकी समर्थन का आश्वासन दिया गया कि जापान फिलीपीन के प्रति आक्रामक कार्यवाहियों का विचार नहीं बनाएगा। जापान की एक और कूटनीतिक विजय हुई। आंग्ल-जापानी गठबंधन में 1905 को संशोधन किया गया जिसमें पूर्वी एशिया और भारत के क्षेत्रों को और एक नयी शर्त को भी शामिल किया गया कि यदि इंग्लैंड या जापान में से एक पर इन क्षेत्रों में किसी तीसरी ताकत का आक्रमण होता है तो दूसरा स्वतः उसकी सहायता को आएगा। इंग्लैंड ने कोरिया में जापान के सर्वोच्च हितों और उसके हितों की रक्षा के लिए उपयुक्त उपाए करने के उसके अधिकार को मान्यता दे दी।

इस तरह, पोर्ट्समाउथ की संधि संपन्न होने से पहले ही जापान को अमेरिका और इंग्लैंड दोनों की ओर से यह मान्यता मिल गयी कि कोरिया उसका प्रभाव क्षेत्र था। जापान ने समूचे सखालीन और हरजाने की मांग की, लेकिन रूस इस बात पर अड़ा रहा था कि वह जापान को कोई भी क्षेत्र या हरजाना नहीं देगा। जापान युद्ध के कारण आर्थिक और वित्तीय संकट का सामना कर रहा था और इस स्थिति में नहीं था कि बातचीत टूट जाने को सहन कर सके या वापस युद्ध का मार्ग अपनाये। इसलिए, वह अपनी मांगों पर अड़ नहीं सका और उसने समझौता कर लिया। पोर्ट्समाउथ की संधि की शर्तों में हरजाने का कोई प्रावधान नहीं था। संधि की शर्तें निम्न थीं।

1) कोरिया की स्वाधीनता और जापान के सर्वोच्च राजनीतिक, आर्थिक और सैनिक हितों को मान्यता।

2) लियाओतुंग में रूस के अड्डों और अधिकारों का, और दक्षिणी मंचूरियाई रेलपथ का जापान को हस्तांतरण।

3) जापानी रेलपथ गार्डों को छोड़कर मंचूरिया से सभी विदेशी सैनिकों की वापसी।

4) दक्षिणी सखालीन को, और उससे लगी जल सीमा में मछली मारने के विशेष अधिकारों को जापान को देना।

5) मंचूरिया के वाणिज्यिक और औद्योगिक विकास के लिए चीन के संभावी उपायों में रूस और जापान का हस्तक्षेप न करना।

जापान के लोग इन शर्तों से सन्तुष्ट नहीं थे। वे हरजाने की अपेक्षा करते थे जिससे जापान की आर्थिक स्थिति सुधरे और युद्ध के लिए उन्होंने जो बलिदान किये थे वे सार्थक हों। टोक्यो में दंगे भड़क गये। अनेक लोगों की जानें गयीं और मार्शल लॉ की घोषणा करनी पड़ी।

19.6 रूस-जापान युद्ध के परिणाम

रूस-जापान युद्ध के परिणाम के तहत हम यह पढ़ेंगे कि जापान ने कोरिया को किस तरह अपने में मिलाया और मंचूरिया में अपने प्रभाव को बढ़ाया।

19.6.1 कोरिया का समामेलन

लियाओतुंग प्रायद्वीप से संबंधित पोर्टसमाउथ की संधि की शर्तों की पुष्टि के लिए चीन और जापान के बीच हस्तांतरण को वैद्य करने के लिए एक अलग समझौता हुआ।

कोरिया पर जापान के बढ़ते कब्जे को रोकने के लिए कोरिया ने अमेरिका से आग्रह किया, लेकिन उसका कोई अनुकूल परिणाम नहीं निकला। नवंबर, 1905 में, अमेरिका ने सिओल में अमेरिकी दूतावास बंद कर देने का आदेश दिया। अमेरिका कोरिया को जापान का संरक्षित राज्य मानना था। इतो हिरोबूमी नवंबर, 1905 में कोरिया का रेजीडेंट जनरल बन गया, और 25 जुलाई, 1907 के समझौते में कोरिया को रेजीडेंट जनरल के अधीन एक संरक्षित राज्य बना दिया गया।

कोरिया के राजा ने 1907 में हेग (नीदरलैंड) से आग्रह किया, जिस पर 'न्यूयार्क ट्रिब्यून' ने टिप्पणी की कि जापान ने कोरिया में जो कुछ किया उसका अधिकार "उतना ही उचित था जितना रूस, फ्रांस, इंग्लैंड या किसी और ताकत का अपने अधीनस्थ राष्ट्रों के साथ किए गए व्यवहार का अधिकार था"। रूस ने 1907 में जापान के साथ एक गुप्त समझौता किया जिसमें कोरिया के साथ "राजनीतिक एकजुटता" बनाने की जापान की विशिष्ट इच्छा को विशिष्ट मान्यता दी गयी। इसलिए, जापान ने भावी समामेलन के लिए "अंतर्राष्ट्रीय समझ" बना ली। बेशक, इस दिशा में एकमात्र बाधा कोरियावासियों का प्रतिरोध था।

कोरियावासी यह स्वीकार करने को तैयार नहीं थे कि जापान के प्रायोजन में किये गए सुधार और कार्यपालिका के विभागों में जापानी सलाहकारों और अधिकारियों की नियुक्ति कोरिया के विकास के हित में थी। इतो को आशा थी कि समामेलन को टाला जा सकेगा और सुधारों को कोरिया के राजदरबार और कोरिया की कार्यपालिका के सहयोग से लागू किया जा सकेगा। लेकिन कोरिया के प्रति उसके पैतृकवादी रवैये, कोरियाइयों के प्रति और उनकी परंपराओं और संस्कृति के प्रति उसकी अवमानना और सुधारों को इस आधार पर थोपने का उसका प्रयास कि इनसे जापान आधुनिकीकरण की ओर बढ़ा, इन सबने उसे घृणा का पात्र बना दिया। बाधाओं की एक सजग नीति का पालन किया गया। जब 1909 में इतों ने अपने पद से त्याग पत्र दिया तो, उसे आभास था कि उसकी नीतियां असफल रही थीं।

अक्तूबर, 1909 में हार्बिन में एक निरीक्षण यात्रा के दौरान एक कोरियाई ने इतो की हत्या कर दी। इतो की मृत्यु से कोरिया को जापान में मिला लेने का एक पर्याप्त बहाना मिल गया। इसकी भूमिका के तौर पर कोरिया में जापान-समर्थक भावनाएं तैयार करने का तुरंत प्रयास किया गया। इर्लाचिन हो नाम के एक कोरियाई संगठन ने जापानी राष्ट्रवादी संगठन कोकुर्युकाई की प्रेरणा पर दिसंबर, 1909 में कोरियाई और जापानी अधिकारियों को एक याचिका देकर कोरिया की रक्षा के लिए जापान और कोरिया के विलय की मांग की। इसमें कोई संदेह नहीं कि जापानी सरकार पहले कोरियाई विरोध को दबाने के विषय में कहीं अधिक चिंतित थी। कत्सुरा सरकार में युद्ध मंत्री और उसी समय सिओल में रेजीडेंट जनरल नियुक्त हुए, सेनापति तेराउची मासाताके, को कोरिया के "समामेलन के लिए निवेदन" करने के लिए बाध्य करने में सफलता मिली। 22 अगस्त, 1910 को तेराउची

और कोरिया के राजा ने समामेलन संधि पर हस्ताक्षर किए। तेराउची कोरिया का पहला महा राज्यपाल (गवर्नर जनरल) बन गया और 1916 में प्रधानमन्त्री बनने तक इस पद पर रहा। कोरिया अब देश नहीं रहा। ताईवान के साथ, कोरिया भी उपनिवेश बन गया और जापान ने कोरिया की स्वाधीनता की सारी मांगों को जिस सख्ती से दबाया, उसके कारण वह सदा के लिए कोरियावासियों की घृणा का पात्र बन गया।

19.6.2 मंचूरिया में जापान का प्रभाव क्षेत्र

कोरिया का समामेलन "अंतर्राष्ट्रीय समझ" से हुआ। लेकिन मंचूरिया के मामले में जापान को और सतर्कता बरतनी पड़ी। मंचूरिया चीन का अंग था। जनवरी, 1905 में थ्योडोर रूजवेल्ट ने यह विचार दिया कि मंचूरिया को "चीन को लौटा दिया जाए जिससे उसे महाशक्तियों की गारंटी के तहत तटस्थ क्षेत्र बना दिया जाए।" तब जापान ने तुरंत ये आश्वासन दिये थे कि समान अवसर के सिद्धांत का मंचूरिया में सम्मान किया जाएगा। प्रशासन "सार रूप में" चीन के हाथों में रहेगा। फिर भी, जापान ने यह कहते हुए चीन की क्षेत्रीय अखंडता की मान्यता को सीमित कर दिया था कि यह शांति और व्यवस्था और जीवन और संपत्ति की रक्षा करने के लिए सुधार और अच्छे प्रशासन पर सशर्त थी। इसलिए चीन के साथ दिसंबर, 1905 के समझौते के लिए होने वाली बातचीत में, जापान ने मंचूरिया में जीवन और संपत्ति की रक्षा के लिए सुधारों को वांछनीय शर्तों के तौर पर शामिल करने का प्रयास किया। जापान ने इस का भी प्रयास किया कि वह विदेशों में व्यापार के लिए मंचूरिया में कुछ शहरों के लिए चीन की सहमति ले, चांगचुन और किरिन के बीच रेलपथ का जाल बढ़ाने की अनुमति ले, कोयले की खानों का प्रबंध अपने हाथों में ले और चीन से यह गारंटी ले कि वह मंचूरिया को किसी और ताकत को हस्तांतरित नहीं करेगा। लेकिन चीन ने इसका प्रतिरोध किया और अंत में केवल निम्न बातों के लिए सहमत हुआ :

1) मंचूरिया में विभिन्न स्थानों को व्यापार के लिए खोलना।

2) जापानी ऋण से चांगुचन-किरिन रेलपथ का निर्माण करना।

3) सुधारों को लागू करना।

जापान को चीन द्वारा मंचूरिया किसी और शक्ति को हस्तांतरित न करने की मांग को वापस लेना पड़ा। जापान की इस मांग को अंत में संधि में शामिल नहीं किया गया कि चीन ऐसा कोई भी रेलपथ बनाने से पहले जापान से परामर्श लेगा जिसकी दक्षिणी मंचूरिया में जापान के रेलपथों से प्रतिद्वंद्विता हो। वैसे यह मांग सम्मेलन की कार्यसूची का अंग थी।

बातचीतों के रूख से यह स्पष्ट है कि जापान मंचूरिया में अपने आर्थिक हितों को बढ़ावा देने और दूसरी ताकतों की प्रतिद्वंद्विता को रोकने के लिए भी दृढ़प्रतिज्ञ था। मंचूरिया में जमी जापानी सेना ने इस उद्देश्य को प्राप्त करने का प्रयास किया। इंग्लैंड और अमेरिका ने इस बात का विरोध किया कि जापानी सेना विदेश व्यापार को बाहर रखने के लिए सैनिक कारणों का उपयोग कर रही थी। इंग्लैंड ने जापान को यह स्मरण कराया कि रूस के साथ उसके युद्ध के लिए अमेरिका और इंग्लैंड ने इस स्पष्ट समझ के तहत धन लगाया था कि जापान खुला द्वार नीति को स्वीकार करेगा। सेना अपनी कार्यवाही को यह कह कर उचित ठहरा सकती थी कि वह "रूसी युद्ध का प्रतिरोध" से बचाव कर रही थी, लेकिन यदि ऐसा कोई युद्ध हुआ तो जापान को एक बार फिर उनके मित्रों का समर्थन मिलेगा, लेकिन इस शर्त पर कि जापान खुला द्वार नीति का सम्मान करे।

जापान के सरकारी हल्कों के भीतर चलने वाली बहसों से यह बात सामने आयी कि दो विचार धाराएं थीं, जो बाद के वर्षों में भी दिखायी दीं। इनमें से विदेश मंत्री के नेतृत्व वाली विचारधारा जापान के आर्थिक हितों की रक्षा के लिए इंग्लैंड और अमेरिका के साथ सहयोग को प्राथमिकता देती थी। व्यापारी वर्ग भी सामान्यतौर पर इस विचारधारा से सहमत था। इसका अर्थ यह निकलता था कि जापान को मंचूरिया में उससे अधिक दावों के लिए जोर नहीं देना चाहिए जितना इंग्लैंड और अमेरिका सहन करेंगे। सेना ओर उसके राजनीतिक मित्रों का यह मानना था कि मंचूरिया में जापान के हित रणनीति महत्त्व के थे। इसलिए जापान को यातायात और संचार पर नियंत्रण करने, नागरिक व्यवस्था बनाये रखने और कोरिया की सीमा की रक्षा करने की स्थिति में होना चाहिए। अमेरिका की दृष्टि में, इससे मंचूरिया केवल "क्षेत्र का नाममात्र का अधिराज" बन जाएगा, क्योंकि सारे भौतिक लाभ "अस्थायी स्वामी" (जापान) अपने पास रख लेगा।

सितंबर, 1909 में जापान ने चीन से मंचूरिया की कोयला खानों में उत्खनन के अधिकार और कई रेलपथ संबंधी रियायतें ले लीं। जुलाई, 1910 में, रूस और जापान के बीच हुए एक गुप्त समझौते में क्षेत्रों का विभाजन कर लिया गया। रूस उत्तर मंचूरिया में और जापान दक्षिणी मंचूरिया में। इस समझौते में दोनों देशों के उनके अपने-अपने क्षेत्रों में अपने हितों की रक्षा में हस्तक्षेप करने के अधिकार को भी मान्यता दी गयी। इसमें यह भी प्रावधान रखा गया कि किसी ताकत की ओर से चुनौती मिलने की स्थिति में देश आपस में सहयोग करेंगे। यह समझौता दक्षिणी मंचूरिया और चीनी पूर्वी रेलपथ के राष्ट्रीयकरण के अमेरिकी प्रयासों के जवाब में किया गया।

इंग्लैंड और अमेरिका की इस पर क्या प्रतिक्रिया रही ? इंग्लैड ने 1911 में नवीनीकरण के लिए आने वाले आंग्ल-जापानी गठबंधन में इसे शामिल करके मंचूरिया में जापान के अधिकारों को उससे मान्यता दिलाने के जापान के प्रयासों को निष्फल कर दिया। जापान मंचूरिया में अपनी स्थिति बराबरी भारत में इंग्लैंड की स्थिति की बराबरी से करना चाहता था। संधि के अंतिम प्रारूप में न तो मंचूरिया का उल्लेख था, न भारत का। लेकिन फिर भी, यह स्पष्ट था कि इंग्लैंड को उत्तरपूर्वी एशिया में जापान के रास्ते को रोक पाने की अपेक्षा नहीं थी।

वाशिगटन की क्या प्रतिक्रिया रही ? क्या उसने भी इतनी आसानी से छोड़ दिया ? जापान मंचूरिया में अमेरिकी व्यापार और निवेशों में वृद्धि में बाधा बन रहा था, विशेषतौर पर रेलपथ के क्षेत्र में। जापानी और रूसी एकाधिकारों और चीन के उनके साथ प्रतिद्वंद्विता करने वाले रेलपथों के निर्माण की मनाही के कारण अमेरिका के लिए रास्ते बन्द हो गये। फिर भी, अमेरिका इस मुद्दे पर जापान के टकराव के लिए तैयार नहीं था। चीन की अपेक्षा जापान में उसके आर्थिक हित कहीं अधिक दांव पर थे। अमेरिका चीन के अपनी सहायता आप करने के प्रयासों से प्रभावित नहीं था। इसके अतिरिक्त, अमेरिका का पहला उद्देश्य जापान को प्रशांत क्षेत्र से दूर रखना था। इस तरह, 1905 और 1910 के बीच के दौर में, मंचूरिया को खुला द्वार नीति से बाहर रखने के जापान के प्रयासों ने इंग्लैंड और अमेरिका के साथ उसके संबंधों को सचमुच क्षति पहुंचायी (पश्चिमी ताकतों ने कोरिया को खुला द्वार नीति का हिस्सा नहीं बनने दिया)। लेकिन 1911 की चीनी क्रांति से लेकर, चीन में पश्चिमी ताकतों का बनाया पूरा ढांचा खतरे की चपेट में था क्योंकि केन्द्र में ऐसी कोई स्थायी सरकार नहीं था जो इन अधिकारों की रक्षा कर सकती थी। जापान और रूस को इस तथ्य के संदर्भ में महाशक्तियों की ओर से और किसी चुनौती का सामना नहीं करना पड़ा कि मंचूरिया उनका प्रभाव क्षेत्र था।

बोध प्रश्न 2

1) रूस-जापान युद्ध के कारणों और प्रभाव का संक्षेप में विवरण दें। उत्तर 15 पंक्तियों में दें।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2) जापान ने कोरिया को कैसे अपने में मिलाया (समामेलन किया)? 10 पंक्तियों में समझाइए।

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

3) जापान ने मंचूरिया पर अपना प्रभाव कैसे बढ़ाया? 10 पंक्तियों में उत्तर दें।

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

19.7 सारांश

सन् 1912 में मेजी युग की समाप्ति तक जापान एक साम्राज्यवादी ताकत के रूप में उभर चुका था, कोरिया और ताईवान उसके उपनिवेश थे और मंचूरिया उसके प्रभाव क्षेत्र में था। इस क्षेत्र में उसकी स्थिति को दूसरी पश्चिमी ताकतें भी स्वीकारती थीं। बल्कि साम्राज्यवाद की ओर उसके प्रयाण को इंग्लैंड, अमेरिका, और बाद में रूस की सहायता मिली। इन सभी ताकतों ने जापान की महत्त्वाकांक्षाओ को बढ़ावा देना पसंद किया जिससे चीन में उनके अपने हितों की रक्षा हो सके। अमेरिका भी प्रशांत क्षेत्र में फैलती जापान की महत्त्वाकांक्षाओं के बारे में सशंकित था और वह चाहता था कि जापान अपना ध्यान मंचूरिया पर ही लगाये। अधिकारों के साझे को लेकर रूस के साथ उसके झगड़े उसे मंचूरिया में उलझाये रखते। लेकिन, 1912 तक, जापान मंचूरिया को केवल जापान का प्रभाव क्षेत्र बनाने में सफल रहा और रूस और दूसरी ताकतों को अपने पास नहीं फटकने दिया। रूस-जापान युद्ध में जापान की जीत ने एशिया की जनता के लिए एक महान प्रेरणा का काम किया था और उनमें ये अपेक्षाएं जगायी थीं कि जापान उन्हें पश्चिमी साम्राज्यवादी ताकतों से मुक्ति का मार्ग दिखाएगा। लेकिन उनकी ये अपेक्षाएं झूठी साबित हुईं। जापान एशियाई राष्ट्रवाद को समझ नहीं सका और उस पर प्रतिक्रिया नहीं कर पाया।

19.8 शब्दावली

उष्ण जल बंदरगाह : कुछ ऐसे बंदरगाह होते हैं जहाँ समुद्र का पानी जाड़ों में जम जाता है तथा जाड़ों में ये बंद रहते हैं, उष्ण जल बन्दरगाह पूरे साल खुल रहते हैं।

जेनरो : सयाने या वरिष्ठ राजनेता

तिहरा हस्तक्षेप : संधि के बाद फ्रांस, इंग्लैड और जर्मनी जापान के लाभ सीमित करने के लिए एक हो गये और उन्होंने जापान को उसके द्वारा चीन में हथियाये गये कुछ विशेषाधिकारों को छोड़ देने को बाध्य किया। इन तीन ताकतों के हस्तक्षेप को ही तिहरा हस्तक्षेप कहा जाता है।

19.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) अपना उत्तर भाग 19.2 के आधार पर लिखें।
2) अपना उत्तर उपभाग 19.3.1 के आधार पर लिखें।
3) अपना उत्तर भाग 19.4 के आधार पर लिखें।

बोध प्रश्न 2

1) अपना उत्तर भाग 19.5 के आधार पर लिखें।
2) अपना उत्तर उपभाग 19.6.1 के आधार पर लिखें।
3) अपना उत्तर उपभाग 19.6.2 के आधार पर लिखें।